Page-05
UNIT-2(d)

M.A 4th Semester Gr.C (Modern India)
Paper-XV

Dr. Amol Jha
HOD History
19-07-20

Aligarh Movement - Part-V

मकतबों में मुस्लिम धर्मशास्त्र, भाषा, तर्कशास्त्र, प्राकृतिक विज्ञान, गणित, हकीमी, ज्योतिष आदि का अध्ययन किया जाता था। इसे सैयद अहमद पसन्द नहीं करते थे। उनका कहना था कि – "अब मुस्लिम विज्ञान की व्यर्थता बिल्कुल स्पष्ट हो चुकी है और यह बात अच्छी तरह साफ हो चुकी है कि उनमें कोई उपयोगी ज्ञान नहीं है" जो सही कहना है कि मुसलमानों का पतन हुआ। वे विश्वविद्यालयों की शिक्षाओं को भी अनुपयोगी मानते थे। सैयद अहमद खाँ की दृष्टि में शिक्षा के तीन उद्देश्य होने चाहिए – ① धार्मिक तत्वों का ज्ञान कराना ताकि धर्म में विश्वास जागे तथा परम्परा का बुद्धि से मेल कराना ताकि विवेक की कसौटी पर रखकर बुरी परम्परा का त्याग कर कल्याण हो ② आवासीय शिक्षा संस्थाओं की स्थापना ताकि छात्रों का सामूहिक रूप से चरित्र निर्मित हो ③ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन जिससे विवेक तर्क की वृद्धि हो। शिक्षा के इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मुस्लिम शिक्षा योजना में तीन स्तर के संस्थाओं की व्यवस्था की गई — (i) 18 साल से अधिक उम्र के छात्रों के लिए मुस्लिम ऐंग्लो ओरियण्टल कालेज की स्थापना। इसमें भी तीन भाग थे – अंग्रेजी, उर्दू एवं अरबी तथा फारसी। (ii) माध्यमिक स्कूल जिनमें 11 से 18 वर्ष की उम्र के छात्र पढ़ें। उर्दू भाषा को इन तालीमी शिक्षा के लिए माध्यम बनाया गया। (iii) मकतब अर्थात् प्राइमरी स्कूल — 6 से 11 वर्ष के छात्रों के लिए। इन सभी शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा अनिवार्य थी।

मुसलमानों में शैक्षणिक प्रसार के लिए सैयद अहमद खाँ ने सर्वप्रथम 1864 में गाजीपुर में अंग्रेजी शिक्षा का एक स्कूल खोला। 1865 में अंग्रेजी पुस्तकों का उर्दू में अनुवाद करने के लिए एक 'Scientific Society' की स्थापना की। 1869 में उन्होंने लन्दन यात्रा के बाद 1874 ई० में अलीगढ़ में उन्होंने मोहमडन ऐंग्लो ओरियण्टल स्कूल की स्थापना की जो 1877 ई० में मोहमडन ऐंग्लो ओरियण्टल कालेज के रूप में परिवर्तित हो गया। 1920 में यही कालेज अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित हो

Scanned with CamScanner